सत्र 2019–20

Madhyma Diploma in Performing Art – I Year (M.D.P.A.)
Regular

S.No.	Paper Description	Maximum	Minimum
01.	Theory – I	100	33
02.	Practical – Demonstration & Viva	100	33
	Grand Total	200	66

सत्र 2019–20
नियमित परीक्षार्थियों हेतु
मध्यमा डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट प्रथम वर्ष (M.D.P.A.)
तबला–शास्त्र

समय : 3 घंटे

पूर्णांक	उत्तीर्णांक
100	33

इकाई 1

श्रुति की परिभाषा तथा शुद्ध एवं विकृत 12 स्वरों की जानकारी। आलाप, तान, सरगम, एवं लक्षण गीत की परिभाषा।

इकाई 2

पाठयक्रम में अब तक सीखे गए तालों क अतिरिक्त निम्नांकित तालों के ठेका को दुगुन, चौगुन मे लिखना–झूमरा, चौताल, सूलताल।

इकाई 3

तबले की उत्पत्ति की संक्षिप्त ऐतिहासिक जानकारी। दिं, त्रक, घ्ड़ान, क्ड़धातिट, क्ड़ान, घेघेतिट इन बोल समूहो की जगह तथा उनकी निकास विधि की जानकारी।

इकाई 4

उदाहरण सहित संक्षिप्त जानकारी–ग्रह, मुखडा मोहरा लग्गी, तिहाई (दमदार एवं बेदम), सरल परन, पेशकार।

इकाई 5

अभ्यास किए हुए निम्नालिखित कायदे व रेले को चार पल्टो सहित ताल लिपि मे लिखने का ज्ञान।

(अ) धाति धागे नधा तिरकिट। धाति धागे तिन किन।

(ब) धाऽतिर घिडनग धाऽतिर घिडनग। धाऽतिर घिडगन तीना किड़नग।

(स) रूपक, त्रिताल, तथा झपताल में दो–दो मुखड़े लिखने का अभ्यास।

सत्र 2019–20
नियमित परीक्षार्थियों हेतु
मध्यमा डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट प्रथम वर्ष (M.D.P.A.)

क्रियात्मक

पूर्णांक	उत्तीर्णांक
100	33

1. प्रथमा परीक्षा हेतु निर्धारित तालों के अतिरिक्त–झूमरा, चौताल तथा सूलताल के ठेके हाथ से ताली देकर पढ़ना एवं तबले पर बजाना।

2. दिं, त्रक, कड़ान, कडधातिट, घेघेतिट, घ्ड़ान– इन बोलों को तबलें तथा बांयें पर निकालना।

3. प्रथमा (प्रथम तथा द्वितीय वर्ष) के कायदों के अतिरिक्त निम्न कायदे व रेले को चार पल्टे तथा तिहाई के साथ चौगुन में बजाना (त्रिताल में)।
   (अ) धाति धागे नधा तिरकिट। धाति धागे तिन किन।
   (ब) धाऽतिर घिडनग धाऽतिर घिडनग। धाऽतिर घिडगन तीना किड़नग।
   (स) धागेनधा तिरकिट धिनगिन धागेनधा तिरकिट।
   (द) धाऽत्रक धिनगिन धागेत्रक धिनगिन।

4. रूपक, त्रिताल तथा झपताल में दो–दो मुखड़े व तिहाईयां।

5. लहरे के साथ पाठ्यक्रम के 6, 7, 8, 10 मात्राओं के ठेके बजाना तथा उनकी दुगुन चौगुन करना।

:संदर्भ सूची:

1. तबला प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा
2. तबला कौमुदी भाग 1 एवं 2 – पं. रामशंकर पागलदास
3. ताल प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा